

## ग्रामीण किशोरियों में पारिवारिक वातावरण से संबंधित अभिव्यक्ति और संघर्ष के बीच संबंध का अध्ययन करना।

अरविन्द सिंह यादव <sup>1</sup>, डॉ० योगर्षि राजपूत <sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोध छात्र स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत

<sup>2</sup> असिस्टेंट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग, महर्षि विश्वामित्र महाविद्यालय बक्सर, बिहार, भारत

### सारांश

शोधकर्ताओं ने लगातार यह प्रदर्शित किया है कि माता-पिता का पालन-पोषण और पारिवारिक वातावरण किशोरों में स्वायत्तता और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के विकास को सुविधाजनक बना सकता है या बाधित कर सकता है, जिसमें मुकाबला करने की रणनीतियाँ भी शामिल हैं। अत्यधिक कठोर या अनियमित अनुशासन जैसे चिंताजनक पालन-पोषण व्यवहार को परिहार मुकाबला रणनीतियों (मुरिस, मेस्टर्स, मर्कलबैक, और हुल्सेनबेक, 2000) की बढ़ती घटनाओं से जुड़ा हुआ दिखाया गया है। नकारात्मक पारिवारिक वातावरण को नियंत्रित करने वाली गतिशीलता द्वारा चिह्नित किया जा सकता है जिसमें परिवार के संबंध कठोर और परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी होते हैं, और 16 और 17 वर्ष की आयु के किशोरों में अवसाद और अन्य आंतरिक विकारों की उच्च रिपोर्ट से संबंधित होते हैं (एडेन और ओज़टुटुनकू, 2001)। इसके अलावा, जॉनसन, लावोई और महोनी (2001) ने पाया कि बढ़ी हुई अंतर-माता-पिता की झड़पें किशोरावस्था के अंतिम चरण (17 से 21 वर्ष की आयु) में सामाजिक चिंता और अकेलेपन की भावनाओं से संबंधित थीं। इसके विपरीत, एकजुट पारिवारिक वातावरण, जो गर्मजोशी, भावनात्मक संबंधों जैसी विशेषताओं द्वारा चिह्नित होते हैं, आंतरिक लक्षणों में कमी का पूर्वानुमान लगाते पाए गए (एडेन और ओज़टुटुनकू, 2001; जॉनसन, लावोई और महोनी, 2001)। पारिवारिक वातावरण जहाँ भावनात्मक बुद्धिमत्ता की नींव सबसे पहले रखी जाती है, वह एक ऐसा वातावरण है जहाँ बच्चा बड़ा होता है और जीवन से संबंधित कुछ जानकारी प्राप्त करता है। स्वस्थ और उच्च गुणवत्ता वाली विशेषताओं वाला पारिवारिक वातावरण बच्चे के विकास को कई तरह से प्रभावित करता है जैसे बच्चे की अहंकार अवधारणा और उसका भावनात्मक और सामाजिक विकास। माता-पिता की सामाजिक स्थिति, निवास, परिवार के भीतर संबंध, भाई-बहनों की संख्या और भाई-बहनों के बीच संबंध पारिवारिक वातावरण की विशेषताओं को निर्धारित करते हैं। विल्ट फेंग एट अल। (1990) ने पारिवारिक वातावरण को इस तरह से परिभाषित किया है कि परिभाषा माता-पिता की सामाजिक स्थिति को निर्धारित करने वाली विशेषताओं को कवर करेगी जैसे कि माता-पिता का शैक्षिक स्तर, व्यावसायिक स्थिति और पेशे के साथ-साथ निवास की गुणवत्ता, माता-पिता की कार्य परिस्थितियाँ और भाई-बहनों के संबंध। ग्रोलनिक एट अल। (1994) परिवार जिस वातावरण में रहता है उसे सीखने की एक ऐसी सेटिंग के रूप में परिभाषित करते हैं जिसका बच्चे पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जीवन से संबंधित अनुभव प्राप्त करते समय बच्चा पारिवारिक वातावरण के स्रोतों से काफी हद तक प्रभावित होता है। इस शर्त पर कि माता-पिता की सामाजिक स्थिति उच्च है, जिस वातावरण में बच्चा बड़ा होता है उसकी गुणवत्ता इस बढ़ती गुणवत्ता के साथ बढ़ती है।

**मूल शब्द:** ग्रामीण किशोरिया, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक विकास, भावनात्मक

### परिचय

किशोरावस्था को हमेशा से ही एक ऐसा समय माना जाता है जब किशोर अक्सर अपने माता-पिता से दूर रहते हैं, अपनी पहचान विकसित करते हैं और अपनी स्वतंत्रता का दावा करते हैं। आधुनिक किशोरों में अवसाद, तनाव और चिंता की अभूतपूर्व दर यह दर्शाती है कि वे अनूठी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जिनके लिए स्थिति को सुधारने के लिए नए और प्रभावी तरीकों की आवश्यकता है।

किशोरावस्था बचपन और वयस्कता के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसकी विशेषता महत्वपूर्ण शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिवर्तन है। ये परिवर्तन न केवल नए जोखिम लेकर आते हैं, बल्कि युवा लोगों के तत्काल और भविष्य के स्वास्थ्य को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के अवसर भी प्रस्तुत करते हैं। जबकि किशोरों के स्वास्थ्य पर वैश्विक स्तर पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है, फिर भी ज्ञान और कार्रवाई दोनों में अभी भी बड़ी कमी है। सकारात्मक मनोविज्ञान किशोरों सहित व्यक्तियों की भलाई में सुधार करना चाहता है। इसे व्यवहारिक, संज्ञानात्मक और भावनात्मक क्षेत्रों की एक श्रृंखला के रूप में माना जा सकता है जो भलाई में सुधार के लिए महत्वपूर्ण हैं। इनमें स्वस्थ सामाजिक संबंध विकसित करना, अधिक आशावादी बनना, अर्थ खोजना और माइंडफुलनेस का अभ्यास करना शामिल है।

### किशोरावस्था

किशोरावस्था (Adolescence) मानव जीवन का वह महत्वपूर्ण चरण है जो बचपन और वयस्कता के बीच आता है। यह शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से परिवर्तन का समय होता है। आमतौर पर यह अवस्था 12 से 19 वर्ष की आयु के बीच मानी जाती है। किशोरों और उनके माता-पिता दोनों के लिए किशोरावस्था को पारंपरिक रूप से मध्य बचपन के वर्षों की तुलना में विकास में अधिक कठिन अवधि माना जाता है।

कई प्रमुख चिकित्सक और मनोविश्लेषण सिद्धांतकार अभी भी किशोरावस्था को एक मनोवैज्ञानिक रूप से अशांत अवस्था, तनाव और दबाव की अवधि के रूप में देखते हैं। हालांकि, सामान्य किशोरों की अनुभवजन्य जांच से संकेत मिलता है कि इस अवधि के दौरान किशोर और माता-पिता की उथल-पुथल की सीमा को काफी बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है। किशोर आयु वर्ग की अधिकांश समस्याएं और तनाव बच्चों के विकास के बारे में भ्रम से उत्पन्न होते हैं। किशोर की भूमिका किशोरावस्था की स्थिति के बारे में अस्पष्टता और इस सबसे तेजी से बढ़ते चरण की शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक जरूरतों के बारे में अज्ञानता, कई तनावों का कारण बनती है।

## किशोर शिक्षार्थी की प्रमुख विशेषताएँ

शैक्षिक (Academic) किशोर अवस्था में स्वयं परीक्षण, निरीक्षण, विचार और तर्क करने की प्रवृत्ति होती है। इसलिए शिक्षण का स्वरूप भी मानसिक विकास, शारीरिक विकास, व्यक्तिगत भिन्नता के अनुरूप होना चाहिए, जिससे किशोर अध्येता उसे अपनी समझ के अनुरूप आसानी से ग्रहण कर सके।

### सामाजिक

किशोर अवस्था में बालक में जीवन दर्शन, नए अनुभवों की इच्छा, निराशा, असफलता आदि के कारण आपराधिक प्रवृत्ति का विकास होता है। समाज-सेवा की भावना का तीव्र विकास होता है। वह स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहता है। सामाजिक बुराइयों पर अपना तर्क देने लगता है। अतः शिक्षण इस अवस्था में सही मार्ग में सहायक होता है।

### भावनात्मक

किशोर अवस्था में भावनात्मक रूप से शिक्षार्थी किसी भी तथ्य को समझने में शीघ्रता करते हैं। वे भावनात्मक प्रवृत्ति के कारण उचित पथ प्रदर्शन के अभाव में गलत प्रवृत्तियों का शिकार भी हो जाते हैं। अतः शिक्षण का प्रारूप सही मार्गदर्शन वाला होना आवश्यक होना चाहिए।

### संज्ञानात्मक

किशोर अवस्था में मस्तिष्क का लगभग सभी दिशाओं में विकास होता है। वे कल्पना, नैतिक तथा अनैतिक के विषय में सजग हो जाते हैं। अतः शिक्षण क्षेत्र में किशोर की संज्ञानात्मक प्रवृत्ति महत्वपूर्ण होती है।

### परिवार

परिवार वह वातावरण है जहाँ बच्चे अपनी क्षमताओं का उपयोग करना सीखते हैं और भौतिक दुनिया को समझते हैं और उसका सामना करते हैं। यह एक ऐसा समय होता है जब वे पारिवारिक संबंधों जैसी तुच्छ चीजों से परेशान नहीं होते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि वे अपने परिवार के हिस्सा हैं। यह वह जगह है, जहाँ वे अपने माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहन और परिवार के बाकी सदस्यों को एक-दूसरे के साथ व्यवहार करते हुए देखते हैं और सीखते हैं कि पारिवारिक रिस्ते कैसे काम करते हैं।

परिवार में हम शिक्षा प्राप्त करते हैं, आजीवन मूल्यों को सीखते हैं और व्यक्तित्व बनाने के लिए आवश्यक शक्ति प्राप्त करते हैं। एक साधारण परिवार में दो माता-पिता और एक बच्चा या कई बच्चे होते हैं।

आज के समाज के लिये स्वास्थ्य पारिवारिक संबंधों के महत्त्वों को समझना आवश्यक है, न तो सफल करियर और न ही वित्तीय स्थिरता उतनी खुशी देती है जितनी हमारे करीबी लोग देते हैं, इसलिए उन लोगों के लिए पेशेवर सफलता हासिल करना आसान है जो अपने निजी जीवन से खुश हैं।

### परिवार की अवधारणा

परिवार एक सामाजिक और आर्थिक इकाई है जिसमें सदस्य आपस में संबंधित होते हैं और साझा जीवन बिताते हैं। यह सामाजिक समृद्धि, समरसता और समर्थन का केंद्र हो सकता है जो व्यक्ति को अपने जीवन में समर्थन और सुरक्षा प्रदान करता है।

गेराल्ड लेस्ली (1982:12) ने इसे दो के समूह के रूप में परिभाषित किया है एक प्रजनन या जैविक इकाई के रूप में, एक परिवार में एक पुरुष और एक महिला होते हैं जिनके बीच सामाजिक रूप से स्वीकृत यौन संबंध होते हैं और उनकी जो भी

संतान होती है। एक सामाजिक इकाई के रूप में, परिवार को दोनों लिंगों के व्यक्तियों के एक समूह के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो विवाह, रक्त या गोद लेने से संबंधित होते हैं, उम्र, लिंग और रिश्ते के आधार पर भूमिका निभाते हैं और सामाजिक रूप से एकल घर या उप-परिवार के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं।

### परिवार का अर्थ

परिवार का अर्थ है कि एक ऐसा समूह जिसमें माता-पिता, बच्चे, और अन्य संबंधित सदस्य शामिल होते हैं। यह एक सामाजिक इकाई है जो सभी सदस्यों के बीच प्रेम, समर्थन, और जिम्मेदारियों को साझा करती है। परिवार का प्रत्येक सदस्य दूसरे सदस्यों के साथ भावनात्मक और व्यावहारिक रूप से जुड़ा होता है। परिवार मानव समाज की एक बुनियादी एवं सार्वभौमिक संस्था है। परिवार संस्था के माध्यम से प्रजनन, शिशु देखभाल जैसे महत्वपूर्ण कार्य संपन्न होते हैं। व्यक्ति का सामाजिक जीवन परिवार से प्रारंभ होता है। व्यक्ति के जीवन में परिवार का सर्वाधिक प्रभाव देखा जाता है। परिवार समाज एवं संस्कृति के केन्द्र में है।

रॉबर्ट बियरस्टेड ने परिवार को परिभाषित करते हुए कहा है, "परिवार प्रजनन और बच्चे की देखभाल की एक अधिकृत, कानूनी और नियमित परंपरा है"।

मैकाइवर और पेज का कहना है कि, "परिवार एक ऐसा समूह है जिसे प्रजनन और बच्चे की देखभाल के लिए लंबे समय तक चलने वाले यौन संबंधों की संज्ञा दी जाती है"।

### पारिवारिक वातावरण

बच्चे समाज की सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति हैं। हर बच्चा अद्वितीय होता है। आखिरकार, शिक्षा की पूरी प्रक्रिया बच्चों पर ही केंद्रित होती है। बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है और इसलिए, उन्हें प्रदान किए जाने वाले सीखने के अनुभव इस लक्ष्य की प्राप्ति में योगदान करते हैं। जन्म से ही, बच्चा अपने आस-पास के सभी कारकों से बहुत प्रभावित होता है। विकास कई कारकों द्वारा नियंत्रित होता है। वास्तव में, बच्चा क्या बनता है यह केवल उसके आनुवंशिक गुणों से ही निर्धारित नहीं होता है, बल्कि उसके आस-पास सक्रिय पर्यावरणीय शक्तियों से भी निर्धारित होता है। बच्चों के शैक्षिक अनुभवों और विकास की प्रकृति और गुणवत्ता पर सबसे अधिक प्रभाव डालने वाली दो संस्थाएँ परिवार और स्कूल हैं। यह एक सामान्य और प्रशंसनीय धारणा है कि परिवार स्कूली शिक्षा के लिए आवश्यक प्रतीकात्मक विशेषताएँ तैयार करते हैं और उन्हें सुदृढ़ करते हैं और स्कूली शिक्षा परिवार की सदस्यता से प्राप्त प्रतीकात्मक संसाधनों का निर्माण और विस्तार करती है। परिवार संरचना और कार्यप्रणाली में बहुत भिन्न होते हैं। स्कूल और बच्चों में भी भिन्नताएँ होती हैं। परिवारों में इस विविधता को देखते हुए, यह समझने की आवश्यकता है कि परिवार के भीतर बच्चों का अनुभव उनके शैक्षिक परिणामों में कैसे योगदान देता है। चूँकि भारत में कुछ शोधों ने बदलते पारिवारिक वातावरण के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया है, इसलिए इस बात का अध्ययन करने की आवश्यकता है कि संज्ञानात्मक उत्तेजना, उपलब्धि अभिविन्यास, मनोरंजक अभिविन्यास और घर की संरचना जैसे विभिन्न पारिवारिक प्रक्रिया चर छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि से कैसे संबंधित हैं। चूँकि शिक्षा की स्वीकृति 6-14 वर्ष की आयु के छात्रों का संवैधानिक अधिकार है, इसलिए माध्यमिक शिक्षा शिक्षाविदों और भारत सरकार दोनों के लिए चिंता का विषय रही है। किशोरावस्था को आमतौर पर उथल-पुथल के समय के रूप में देखा और अनुभव किया जाता है, क्योंकि व्यक्ति बचपन से वयस्कता में संक्रमण की श्रृंखला बनाता है। यह परिपक्व होने की प्रक्रिया किशोरों को नाटकीय शारीरिक, भावनात्मक और

संबंधपरक परिवर्तनों और चुनौतियों के साथ प्रस्तुत करती है। इस प्रकार, किशोरावस्था की अवधि स्वयं व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक कल्याण के लिए एक मजबूत चुनौती पेश कर सकती है। इसके अलावा, किशोर विभिन्न सामाजिक प्रणालियों से प्रभावित होता है, जैसा कि ऊपर बताया गया है। इसलिए, जबकि सामान्य विकास अपनी चुनौतियों को प्रस्तुत करता है, कई सामाजिक प्रभाव किशोरों पर परस्पर विरोधी माँगें भी डाल सकते हैं। ऐसी ही एक प्रणाली है किशोरों का परिवार, जो बचपन के दौरान उनके मनोवैज्ञानिक विकास और कार्यप्रणाली पर सबसे मजबूत प्रभावों में से एक रहा है, और विकास के इस संक्रमणकालीन अवधि के दौरान भी ऐसा ही बना रहता है (कॉम्पस, 1987; लोहमैन और जार्विस, 2000; फेल्ल्स और जार्विस, 1994; स्टर्न और जेवॉन, 1990)।

स्किनर और वेलबॉर्न (1994) चार तरीके सुझाते हैं जिनसे परिवार, खास तौर पर माता-पिता, व्यक्ति के प्रभावी मुकाबला रणनीतियों के विकास को प्रभावित कर सकते हैं। सबसे पहले, परिवार बच्चे और खास तौर पर किशोर के लिए तनाव का एक वस्तुगत स्रोत हो सकता है, जिसके लिए व्यक्ति को ऐसे प्रमुख तनाव से निपटने के लिए कुछ साधन खोजने की आवश्यकता होती है। दूसरा, परिवार जीवन के शुरुआती क्षणों से ही एक बफर के रूप में कार्य करता है, जो बच्चे को केवल उन तनावों को फिल्टर करता है जिन्हें बच्चा विकासात्मक रूप से प्रबंधित करने में सक्षम है। तीसरा, आम तौर पर, बच्चा सबसे पहले परिवार के सदस्यों के प्रत्यक्ष अवलोकन से अपनी अनुकूली और प्रतिकूल दोनों तरह की मुकाबला रणनीतियों को प्राप्त करना शुरू करता है। अंत में, और खास तौर पर किशोरावस्था के दौरान, परिवार के सदस्य एक सामाजिक सहायता नेटवर्क के रूप में कार्य करके सुरक्षा जाल के रूप में काम कर सकते हैं, जिसकी ओर व्यक्ति तनावों से निपटने के लिए सहायता और समर्थन के लिए जा सकता है। यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि किशोर अपने माता-पिता से स्वतंत्रता विकसित होने के कारण इस अवधि की चुनौतियों का सामना करने में सहायता और समर्थन के लिए अपने समकक्ष समूहों पर निर्भर करता है, किशोर द्वारा नियोजित सामना करने की रणनीतियाँ अभी भी उसके परिवार से काफी दृढ़ता से प्रभावित होती हैं। उदाहरण के लिए, लोहमैन और जार्विस (2000) ने किशोरों की चुनी हुई सामना करने की रणनीतियों और उनके माता-पिता की रणनीतियों के बीच मजबूत सकारात्मक संबंध प्रदर्शित किया है। इस प्रकार, जो किशोर अक्सर स्वीकृति का उपयोग करता है, उसके माता-पिता द्वारा भी स्वीकृति रणनीतियों के लगातार उपयोग का समर्थन किए जाने की संभावना है। सामना करने की रणनीतियों को पारिवारिक वातावरण से इस सीमा तक जोड़ा गया है कि परिवार वह संदर्भ प्रदान करता है जिसमें व्यक्ति पहली बार विभिन्न मुकाबला करने की रणनीतियों का अनुभव करता है। इसके अलावा, व्यक्ति फिर परिवार के सदस्यों के साथ मुकाबला करने की रणनीतियों का परीक्षण करना शुरू कर सकता है। इसका अर्थ यह है कि किसी व्यक्ति द्वारा चुनी गई मुकाबला करने की रणनीतियाँ संभवतः उस संघर्ष या सामंजस्य से प्रभावित होती हैं जो उसके पारिवारिक वातावरण की विशेषता है (कॉम्पस, 1987; डी एंडा एट अल., 2000; लोहमैन और जार्विस, 2000; फेल्ल्स और जार्विस, 1994; स्किनर और वेलबॉर्न, 1994; स्टर्न और जेवॉन, 1990)

### साहित्य समीक्षा

कौर और कलारम्मा (2004) ने घरेलू वातावरण, सामाजिक बुद्धिमत्ता और सामाजिक-आर्थिक स्थिति (एसईएस) स्कोर के विभिन्न आयु स्तरों और दो लिंगों के बीच मौजूद अंतर्संबंधों का अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि सामाजिक-आर्थिक

स्थिति का प्रभाव सामाजिक बुद्धि पर पड़ा है। घरेलू वातावरण ने सामाजिक बुद्धिमत्ता पर सकारात्मक प्रभाव दिखाया। कौर एट अल. (2009) ने आत्म-अवधारणा के साथ घरेलू पर्यावरण घटकों जैसे सुरक्षा, अनुरूपता, इनाम और पोषण का महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध देखा है। एल्बर्स एट अल. (2004) 15 वर्षों के अनुवर्ती अध्ययन में, सामाजिक माहौल और पारिवारिक माहौल की जांच की गई और पाया गया कि अशांत और पारिवारिक कामकाज ने बाद के अंतरंग संबंधों की खराब गुणवत्ता की भविष्यवाणी की, लेकिन वयस्क सामाजिक कामकाज के अन्य आयामों की भविष्यवाणी नहीं की।

(स्टाइनबर्ग एट अल 1992), "माता-पिता की भागीदारी किशोरों की स्कूल की सफलता को बढ़ावा देने की अधिक संभावना है जब यह एक आधिकारिक घरेलू वातावरण के संदर्भ में होती है।

बालदा, शांगवान और कुमारी (2019) ने "किशोर लड़कों और लड़कियों द्वारा देखे जाने वाले पारिवारिक माहौल" की जांच की। परिणामों से पता चला कि शहरी किशोरों ने ग्रामीण किशोरों की तुलना में बहुत अधिक स्वतंत्र, पारिवारिक माहौल को बहुत अधिक एकजुट, बहुत अधिक अभिव्यंजक, बहुत अधिक स्वीकार करने वाला और देखभाल करने वाला माना। इसके अलावा, ग्रामीण किशोरों ने शहरी किशोरों की तुलना में पारिवारिक माहौल को अधिक व्यवस्थित माना; शहरी किशोरों ने ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों की तुलना में पारिवारिक माहौल को काफी बेहतर माना। इसके अलावा, किशोर लड़कों ने पारिवारिक माहौल को काफी बेहतर माना। बहुत अधिक अभिव्यंजक; बहुत अधिक स्वीकार करने वाला और देखभाल करने वाला, बहुत अधिक स्वतंत्र, और जबकि, किशोर लड़कियाँ पारिवारिक माहौल को बहुत अधिक संगठित और नियंत्रित करने वाला मानती थीं। किशोर लड़के पारिवारिक माहौल को किशोर लड़कियों की तुलना में काफी बेहतर मानते थे।

लेविका, कोवल्सिकोवा और कोवाकोवा (2014) ने "परिवारों में होने वाले जोखिम कारकों के किशोरों के भोजन के प्रति रवैये पर प्रभाव का आकलन किया और परिणामों से पता चला कि 79: किशोरों में परिवार में होने वाले एक जोखिम कारक की सूचना दी गई थी। इसके अलावा, एक के बीच संबंध भोजन के प्रति अशांत रवैया और पारिवारिक आहार पर रहना और समस्याओं को हल करने में विफलता और परिवारों में संचार की कमी और परिवारों में मानसिक रोगों की घटना की पुष्टि की गई।

अयोडेले (2006) ने कहा कि जिस वातावरण में एक बच्चा खुद रहता है, वह उसकी सीखने की क्षमता और अंततः स्कूल में उसके शैक्षणिक प्रदर्शन को निर्धारित करने में काफी मदद करता है।

भट और अमीनाभवी (2011) द्वारा 9वीं 10वीं में पढ़ने वाले 100 किशोरों कि मनोसामाजिक क्षमता पर घर के माहौल की प्रभाव की जांच की गई। परिणाम से पता चला कि घर के वातावरण का किशोरों की मनोसामाजिक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

मुरुगन.के. और थिलागावथी (2011) ने पाया कि छात्रों की तर्क क्षमता और घरेलू माहौल औसत है। लिंग, माता-पिता की शिक्षा और माता-पिता की आय के संबंध में महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है। यह अनुमान लगाया गया है कि तर्क क्षमता और घरेलू वातावरण के बीच एक सकारात्मक और महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है।

दीपशिखा और सुमन भनोट (2011), मानव विकास विभाग, एन. डी. कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज फैजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत, पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में किशोरियों के सामाजिक-भावनात्मक समायोजन पर पारिवारिक वातावरण की भूमिका। वर्तमान अध्ययन पूर्वी उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले के कुमारगंज में किया गया था। अध्ययन का उद्देश्य किशोरियों के पारिवारिक वातावरण और उनके सामाजिक-भावनात्मक

समायोजन पर इसके प्रभाव का आकलन करना था। अध्ययन के नमूने में 17-18 वर्ष की आयु वर्ग की सौ किशोरियाँ शामिल थीं। पारिवारिक पर्यावरण पैमाना (FES) और स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची (AISS) का इस्तेमाल किया गया। डेटा का विश्लेषण प्रतिशत और बहु प्रतिगमन विश्लेषण के संदर्भ में किया गया।

### उद्देश्य

ग्रामीण किशोरियों में पारिवारिक वातावरण के अंतर्गत अभिव्यक्ति (Cohesion/Expression) और संघर्ष (Conflict) के बीच संबंध का अध्ययन करना।

### परिकल्पना

- **शून्य परिकल्पना (H<sub>0</sub>):** अभिव्यक्ति एवं संघर्ष के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है।
- **वैकल्पिक परिकल्पना (H<sub>1</sub>):** अभिव्यक्ति एवं संघर्ष के बीच सार्थक संबंध है।

### विधि

#### नमूना

बक्सर जिला के कॉलेज जाने वाली विज्ञान संकाय की 50 ग्रामीण किशोरियों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया।

#### उपकरण

डॉ. हरप्रीत भाटिया एवं डॉ. एन.के. चड्ढा द्वारा विकसित पारिवारिक वातावरण स्केल।

**आयाम (Dimensions):** अभिव्यक्ति (Cohesion) एवं संघर्ष (Conflict)

**सांख्यिकीय तकनीक:** पियर्सन सहसंबंध (Pearson's Correlation)

### डेटा विश्लेषण

**नमूना:** ग्रामीण क्षेत्र की 50 किशोरियाँ

मापदंड	अभिव्यक्ति (Cohesion)	संघर्ष (Conflict)
N (नमूना)	50	50
औसत (Mean)	50.86	41.40
मानक विचलन (SD)	6.78	5.43
न्यूनतम (Min)	32	26
अधिकतम (Max)	61	53

**सहसंबंध (Pearson's r):**  $t = -0.13$ ,  $\chi = 0.36$

### परिणाम

अभिव्यक्ति और संघर्ष के बीच संबंध ऋणात्मक (Negative) है, अर्थात् जहाँ अभिव्यक्ति अधिक है वहाँ संघर्ष थोड़ा कम होने की प्रवृत्ति है। लेकिन यह संबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है ( $p > 0.05$ )।

### निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण किशोरियों के पारिवारिक वातावरण में अभिव्यक्ति और संघर्ष के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया। यानी पारिवारिक वातावरण में किशोरियों की अभिव्यक्ति का स्तर संघर्ष के स्तर को निर्णायक रूप से प्रभावित नहीं करता।

### सुझाव

1. परिवार में संवाद और सकारात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना चाहिए ताकि संघर्ष की संभावनाएँ कम हों।
2. माता-पिता को चाहिए कि वे किशोरियों को खुलकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करने का अवसर दें।
3. पारिवारिक परामर्श (Family Counseling) और सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से संवाद कौशल विकसित किए जा सकते हैं।
4. संघर्ष समाधान (Conflict resolution) तकनीकें सिखाई जाएँ।

### संदर्भ

1. देसाई, एम. (1994). परिवार को समझने के लिए अवधारणा और वैचारिक ढाँचे. सामाजिक और आर्थिक विकास के एक अभिकरण के रूप में परिवार की भूमिका को बढ़ाना (परिवार अध्ययन रिपोर्ट इकाई, पृष्ठ 16-41). बॉम्बे, भारत: TISS.
2. औफसीसर, डी., जेकीलेक, एस., और ब्राउन, बी. (2006)। पारिवारिक वातावरण और किशोर कल्याण: सकारात्मक और नकारात्मक पारिवारिक प्रभावों का एकसोजर। बाल रुझान और राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य सूचना केंद्र।
3. भाटिया, एच., और चड्ढा, एन.के. (2004)। पारिवारिक पर्यावरण पैमाना. राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम, आगरा।
4. सन, वाई. (2001). माता-पिता के वैवाहिक जीवन में व्यवधान से पहले और बाद में पारिवारिक वातावरण और किशोरों का कल्याण: एक अनुदैर्घ्य विश्लेषण। जर्नल ऑफ मैरिज एंड फैमिली, 63(3), 697-713.
5. दाधानिया, डी. ए. (2015)। किशोरावस्था के लड़कों और लड़कियों में मानसिक स्वास्थ्य और मनोवैज्ञानिक कल्याण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पब्लिक मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेज, 2(3)।
6. डेनियल्स, ए. डी., और ब्राउन, जे. (2021)। जटिल आघात के बावजूद लचीलापन: पारिवारिक वातावरण और पारिवारिक सामंजस्य सुरक्षात्मक कारक के रूप में। द फैमिली जर्नल, 29(3), 336-345।
7. दासगुप्ता, एम., और सैन, आर. आर. (2015)। किशोर लड़कों में जीवन कौशल और मनोवैज्ञानिक दृढ़ता के विकास पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव। भारतीय मनोविज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 2(2), 110-120.
8. भाटिया, हरप्रीत एवं चड्ढा, एन. के. (1993). पारिवारिक वातावरण स्केल (Family Environment Scale). मानस विज्ञापन केन्द्र, वाराणसी।
9. अग्रवाल, आर. (2015). किशोरावस्था और पारिवारिक वातावरण. नई दिल्ली: राष्ट्रीय प्रकाशन।
10. शर्मा, पी. (2018). पारिवारिक संघर्ष और उसका किशोरों पर प्रभाव. भारतीय मनोविज्ञान जर्नल, 45(2), 112-120.
11. Miller RB, Ryan C, Keitner G, Bishop D, Epstein N, The McMaster Approach to Families: Theory] assessment] treatment and research- Journal of Family Therapy, 2000;22(2):168-189.
12. Olson DH, Circumplex model of marital and family systems- Journal of Family Therapy, 2000;22(2):144-167.